REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

लोक साहित्य में रामकथा

डॉ. नरेन्द्र सिंह
सहायक प्रवक्ता (हिन्दी) सी.आर.एम.जाट महाविद्यालय, हिसार.

भोध–आलेख–सार

लोक साहित्य

लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है, जिसकी रचना लोक करता है। लोक साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव इसलिए उसमें जन जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित हैं।

डॉ. सत्येन्द्र के अनुसार– ''लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार शास्त्रीयता और पंडित्य की चेतना अथवा अंहकार से शून्य है, और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।[1]

लोक साहित्य किसी एक राज्य या देश की धरोहर हो सकता है वह उस राज्य या देश की संस्कृति पर निर्भर करता है वहां के लोगों द्वारा मौखिक कथा व लोक गीतों में उस राज्य या देश की कोई घटना या व्यक्ति विशेष जीवन की प्रासंगिगता मुखरित होती है। राम कथा ऐसी ही एक कथा है जो महर्षि वाल्मीकि द्वारा श्री रामचन्द्र जी के जीवन चरित्र को आम आदमी के जीने का सहारा बनाती है। वैसे तो भारत में ही नहीं विदेशों में भी रामकथा अपना महत्व रखती है। देश के विभिन्न राज्यों में लोक साहित्य में संकलित रामकथा उतर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, हिमाचल प्रदेश तथा बिहार में विशेष रूप से प्रचलित है।

हरियाणा में रामायण –रामायण (रामलीला) का प्रारम्भ सर्वप्रथम ''मेधाभक्त तथा गोस्वामी तुलसीदास ने किया'' इनके निर्देशन में काशी की रामलीला सर्वाधिक लोकप्रिय हो कर सारे उत्तर प्रदेश में अभिनीत होने लगी। डॉ0 पूर्णचंद शर्मा ने हरियाणा की सांस्कृतिक सीमाओं का अंकन करते हुए लिखा है कि, ''दिल्ली तो हरियाणा में समाविष्ट है ही, उत्तर प्रदेश का मेरठ डिवीजन भी हरियाणवी संस्कृति का अभिन्न अंग है। अतः प्रचलित रामलीला (रामायण) का प्राकट्य चाहे पहले–पहले उत्तर प्रदेश में हुआ हो, पर इसके साथ ही हरियाणा में भी इसके प्रदर्शनों का होना स्वाभाविक ही था। भक्तिकाल प्रसूत इस लीला के प्रदर्शन हरियाणा के गांवों और नगरों में समान रूप से लोकप्रिय हो गए थे तथा पारसी कम्पनियों के आगमन से पूर्व रामलीला (रामायण) के ये प्रदर्शन बहुत ही सात्विक एवं भक्तिभाव से परिपूर्ण होते थे।

रामकथा सम्बन्धित लोक–प्रचलित विविध हरियाणवी लोकगीतों में रामकथा का आदर्शमूलक रूप समाहित है। लोक संस्कारों, धार्मिक रीतिरिवाजों या परम्परागत सामाजिक मूल्यों की उत्कृष्टता–प्रतिपादन में सहायक लोकगीत प्रायः रामकथा के आदर्श पात्रों की ओर इंगित करते हैं, रामकथा–प्रसंगो का यत्र–तत्र उल्लेख करते हैं, तथा वस्तु–संगठन में कथा का पूर्णतया समावेश रामकथा का यह लोक–व्यापी रूप–प्रवाह अधिक सहज, सरल और स्वाभाविक है।

20वीं सदी के प्रारम्भ में श्री यशवंत सिंह वर्मा ने रामायण के अभद्र एवं घिनौने प्रदर्शन देखें होगें। तभी ''हरियाणा के हिसार, उकलाना, नरवाना, टोहाना, हांसी, नारनौद, जीन्द, फतेहाबाद एवं भिवानी के क्षेत्रों में यशवंत सिंह टोहानवी की ''आर्य संगीत रामायण'' को आधार बनाकर

रामलीला खेली जाती है तथा शेष हरियाणा में तुलसी के 'मानस' एवं राधेश्याम की रामायण के अनुसार रामलीला का मंचन किया जाता है। सामान्यतः आर्य समाजी 'टोहानवी' की आर्य संगीत रामायण तथा सनातनी तुलसी एवं राधेश्याम की रामायण को अभिनय का आधार बनाते हैं। तुलसी तथा राधेश्याम की रामायण के आधार पर खेली जाने वाली रामलीलाओं में दोहे तथा चौपाइयां होती हैं, जिन्हें माइक पर बैठा संगीत मास्टर गाता है तथा अभिनेता सुनकर उसका हिन्दी रूपान्तर संवादों में प्रस्तुत करते हैं। ''आर्य संगीत रामायण'' में छंदोबद्ध गेय संवादों के अतिरिक्त नाटक रूप में साथ ही उनका भावानुवाद भी दिया होता है और छोटे–छोटे संवादों की लम्बी–लम्बी श्रृंखलाएं भी। हरियाणा में ऐसी भी मण्डलियां है, जो उक्त ग्रंथों से मिश्रित रूप में कथानक लेकर हरियाणवी भाषा के गीत–संवादों के माध्यम से स्थान–स्थान पर रामलीला खेलती फिरती है। ये प्रदर्शन इनके जीवन–यापन के लिए ही नहीं, अपितु सर्वजनहिताय एवं सर्वजनसुखाय भी होते हैं।''[3]

हरियाणा में रामायण का रंगमंच किसी देवमन्दिर, चौपाल या ऐसे सार्वजनिक मैदान में स्थापित किया जाता है, जिसके कम–से–कम नेपथ्य की ओर दो दीवार अवश्य हो। कई स्थानों पर तो रामलीला के स्थाई एक पूर्ण निश्चित मंच है, जैसे– ''रामलीला कटला हिसार', ''रामलीला ग्रांउड, रोहतक, ''रामलीला मैदान'', हांसी आदि। उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान में रामलीला का प्रदर्शन दृश्यों के अनुसार विविध स्थलों पर होता है। श्री जगदीशचन्द्र माथुर का कहना है कि, ''उत्तर प्रदेश के कई नगरों में रामलीला–प्रदर्शन एक ही मंच एवं प्रेक्षागृह में न होकर भिन्न–भिन्न स्थानों पर अपेक्षित दृश्य के अनुकूल वातावरण और पूर्वस्थित पृष्ठभूमि से लाभ उठाते हुए किया जाता है। बनवास तक की लीलाएं मन्दिरों में होती है, गंगा–पार के लिए नगर के किसी जलाशय अथवा नहर को चुना जाता है। चित्रकूट और उसके बाद की लीलाएं नगर के बाहर एक विस्तृत मैदान को घेरकर की जाती है। भरत–मिलाप और राजतिलक के लिए पुनः मण्डली नगर को वापस आती है।

''हरियाणा में रामलीला के मंच स्थलों में निर्दिष्ट प्रकार का परिवर्तन एवं बिखराव नहीं होता। उसी मंच पर प्रंसग एवं आवश्यकतानुसार अभीष्ट स्थान या दृश्य की उद्‌भावना कर ली जाती है। हाँ केवल दशहरे के दिन जिन स्थानों पर झांकियाँ निकाली जाती है तथा रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाथ के आतिशबाजी वाले पुतले बनाए जाते हैं। वहाँ केवल रावण–वध के लिए व्यवस्था अन्यत्र खुले मैदान में की जाती है। केवल निर्दिष्ट प्रकार के अन्तिम प्रदर्शन दिन में तथा अन्य पूर्ववर्ती सभी प्रदर्शन रात को किए जाते हैं जहाँ आतिशबाजी का आयोजन नहीं होता वहाँ सभी प्रदर्शन रात को ही होते हैं।[4]

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की भांति कुछ रामायण गायक टोलियाँ गांव–गांव में जाकर रामलीला का मंचन करती हैं। रामायण की कथा का प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान होता है केवल बच्चे ही इससे अनभिज्ञ होते हैं अतः वह बड़ी उत्सकुता से रामलीला को देखते हैं। रामकथा धीरे–धीरे आगे बढ़ती है, कुछ लोग अपने पास बैठे हुए को कहकर नींद का झोंका लेते हैं कि'' भाई जब सीता स्वयंबर हो तो मुझे जगा दीजो।'' चलते प्रदर्शन में जब कभी रामपक्ष का पलड़ा भारी हो जाता है या उनकी जीत होती है तो सभी दर्शक जोर–जोर से तालियाँ पीटकर सरवेत स्वर में बोलते हैं–''सियापति (सियावर) रामचन्द्र की जय'' तो इसके प्रत्युत्तर में तुरन्त इसके बाद ही रामलीला का विदूषक जनता को हंसाने के लिए एक विशेष अंदाज में उच्च स्वर में कहता है, ''फूटग्या होक्का रहग्यी नय।'' राम–बनवास, दशरथ–मरण, सीता–हरण एवं लक्ष्मण–मूर्च्छा जैसे दृश्यों के समय दर्शकों के चेहरे अश्रु–प्रक्षालित हो जाते है। ये दर्शक चलते प्रदर्शन में तो मण्डली को श्रद्धा–समान दान देते ही हैं, आरती की थाली में छुट्‌टे पैसे अवश्य डालते हैं।

वस्तुतः कहा जा सकता है कि हरियाणा लोक–मानस में रामायण के मुख्य पात्र सीता–राम आत्मीयता के एक केन्द्र रूप में मिलते हैं जिनके साथ–साथ चलने में और जिनका अवलम्बन पाकर जीने में एक स्वाद मिलता है। सीता वह आत्मीयता है जिसके केन्द्र में राम रहते हैं, राम के लिए आकर्षण लोक–मानस में सीता के कारण ही है। वे सीता के राम हैं इसलिए राम हैं अर्थात् सीता के मन को रमाते हैं, इसलिए हमारे मन को रमाते हैं सीता से यह सगा रिश्ता कई स्तरों पर है। सीता जूते हुए खेत की हराई हैं, वह हराई झंवाती है और उसे जो सूर्य 'राम' तपाता है वही बादल भेजकर फिर सींचता है और उसमें से सृष्टि के नये अंकुर फूटते हैं। रामायण के नायक राम का महत्त्व लोक जीवन में सीता के कारण अधिक है। राम हरियाणा में सबसे अधिक इसलिए भी रमे है कि वे बहुत ही आत्मीय हैं। उनमें बहुत मोह–धोह है। उनका मोह–धोह साधारण मनुष्य जैसा सहज लगता है। जिस रूप में रामायण की पूरी कथा हरियाणा में चित्रित मिलती है उसमें राम के ईश्वरीय रूप की अपेक्षा मानवीय रूप ही अधिक उजागर हुआ है। रामायण की पावन कथा हरियाणवी लोक–मानस में ऐसी घुली–मिली

हैं, ऐसी रच–पच गयी है कि वह राजा राम या भगवान राम की कथा नहीं रह गयी है, वह एक साधारण जीवन जीने वाले तेजस्वी मनुष्य की कथा बन गयी है।[5]

श्री यशवंत सिंह वर्मा के अतिरिक्त हरियाणा प्रदेश में कवि अहमदबख्श की रामायण भी प्रचलित है। इनका जन्म थानेसर में हुआ था। इनकी रामायण सांग प्रणाली में आती है। सांग हरियाणा की विशिष्ट लोक नाट्य शैली है किन्तु थानेसर नगर और शेष हरियाणा में खेले जाने वाले सांगों में कोई सामंजस्य, बराबरी और ताल–मेल नहीं है। दोनों क्षेत्रों में सांग खेलने के ढंग में भी पृथ्वी और आकाश का अन्तर है। कवि अहमदबख्श जाति से कंचन थे। इनके द्वारा लिखित रामायण का क्षेत्र थानेसर के आस–पास अम्बाला, कैथल, करनाल, यमुनानगर आदि रहा है।

अहमदबख्श की रामायण की परम्परा के अनुसार इनकी पार्टी में नगाडे और ढोलक वालों को छोड़कर शेष सभी साजिंदे और कलाकार खाते–पीते सम्पन्न घरों के होते थे जो अवैतनिक रामायण खेलते थे और अपनी जेब से व्यय करते थे। इनकी रामायण में कोई मखोलिया या मसरवारा (विदूषक) नहीं होता था। इस कारण रामायण के कथानक का प्रभाव अंत तक बना रहता था। जबकि अन्य स्थानों पर खेले जाने वाली रामायण (रामलीला) में मखौलिया रामलीला का अनिवार्य अंग था। इस प्रकार हरियाणा में रामलीला हरियाणवी लोक साहित्य का प्रमुख अंग मानी जाती है। लोक साहित्य में लोक गीतों का अपना महत्व होता है। और हरियाणा में रामकथा हरियाणवी लोक गीतों में भी रची–बसी है। हरियाणवी महिलाओं ने अपनी कल्पना शक्ति से रामकथा के अनेक प्रसंगों को गीतों में पिरोया है। यथाः एक प्रसिद्ध लोक गीत देखिए–

सीता का सुअम्बर रचा रह्या सै, उड़ै राजा जुड़े हजार।
वो रावण घणा घमंडी ऐ, वो ल्याया फौज चढ़ाऐ।
वा फौज चुगरदे तै फिरग्यी हे, उसतै टूट्या न धनुष बाण।

एक अन्य गीत के माध्यम से हरियाणवी कर्मठता जिसमें राजा जनक द्वारा हल चलाने की बात कही गई है।

राजा जनक नै हल बणवाया रामा।
सोन्ने की हलसी, चाँदी की पणिहारी रामा।[6]
राम के वन जाने संबंधी गीत
राजा दशरथ का गूंट्ठा पाक्या, आहें राजा रोया सारी रात
बिना मरे मरे सुरग ना दीक्खै।
जा ए बान्दी राणी नै बुलाल्या, आहें राणी खड़ी पिलंग के साथ।
कैकई राणी नैं गूंट्ठा पकड्या, आहें राजा सौया सारी रात।।
माँगण हो सो माँग ले राणी, आहें तन्नै द्यूँ सूं दो वरदान।
माँगूगी हो पीया दिया ए ना ज्यागा, आहें क्यों झूट्ठे करोकरार।।
हम बचाणाँ तैं नहीं फिरणियाँ, आहें राणी क्यों करैं मखौल।
राम अर लिक्षमन फिरो बणां मैं, आहें द्यो चरत–भरत नै राज।[7]

हरियाणवी नारियों के मुख से राम का वनवास जाना और भी मारमिक बन जाता है–

मत जाओ रे राम बणुवास, केकई नै जुलम करे।
गद्दी बैंट्ठे बाबल रोवैं, सुणो राम म्हारी बात।
तम तो रै बेट्टा चले बणां मैं कोण करैगा अड़ै राज।
पाह्याँ पड़ कै राम न्यूं बोल्ले, सुणो पिता म्हारी बात।
मैं तो वचन निभाऊँ थारा, भरत करेगा अड़ै राज।।
पाह्याँ पड़ कै राम न्यूं बोल्ले, सुणो पिता म्हारी बात।
मैं तो वचन निभाऊँ थारा, भरत करेगा अड़ै राज।।[8]

सीता हरण के बाद रावण को समझाती रावण की पत्नी मंदोदरी
कहैं मंदोदरी सुण पति रावण
सुपना बीसों बीस।
कूदत दीखै बाँदरा और यो कटा दीखै सीस,
तुम सिया नै लैके, राम से मिलो।
आठ घाट के आठ समन्दर, आठ लगै मेरै खाई।
मेघनाथ से पुत्र मेरे, कुम्भकर्ण से भाई
हनुमान जैसे बलि सैं उनके, लक्ष्मण जैसे भाई।
झट से वे समुद्र कूदें, झट से कूदें खाई।
तुम सिया ने लैके, राम से मिलो।[9]

ऐसे अनेकों लोक गीत हरियाणवी लोक साहित्य की धरोहर हैं। जो सम्पूर्ण रामकथा को अपने आप समेटे हुए हैं। अंतत हम कह सकते हैं कि लोक साहित्य में रामकथा ठीक उसी प्रकार जीवन्त है जिस प्रकार शरीर में प्राण।

निष्कर्ष–

लोक जीवन की जैसी सरलतम, नैसार्गिक अनुभूमितयी रामकथा का चित्रण लोक गीतों व लोक कथाओं में मिलाता है वैसा और कहीं नहीं मिलता। यह केवल हरियाणा में ही नहीं अपितु भारत के हर राज्य हर शहर में विद्यमान है, और यह कहना भी गलत नहीं होगा कि राम कथा तो पूरे संसार के लोक साहित्य में अपना विशेष महत्व रखती है। लोक साहित्य में लोक–मानव का ह्रदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती गुनगुनाती है, लोक साहित्य में निहित रामकथा सौंदर्य का मूल्यांकन सर्वथा अनुभूतिजन्य है।

संदर्भ ग्रथ –

1. लोक साहित्य विज्ञान डॉ0 सत्येन्द्र पृष्ठ 03
2. डॉ0 पूर्णचंद शर्मा हरियाणा की लोक धर्मी नाट्य परम्परा पृष्ठ180–81
3. डॉ0 पूर्णचंद शर्मा हरियाणा की लोक धर्मी नाट्य परम्परा पृष्ठ180–81
4. मेधनाथ रामलीला प्रसंग पृष्ठ–56
5. यशवंत सिंह वर्मा सांग पृष्ठ–4
6. हरियाणा के लोक गीतो में भक्ति भावना पृष्ठ–148
7. हरियाणा के लोक गीतो में भक्ति भावना पृष्ठ–153
8. हरियाणवी लोक गीत संग्रह पृष्ठ–130–31
9. हरियाणवी लोक गीत संग्रह पृष्ठ–130–31